International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

एक सामाजिक अपराध के रूप में भ्रष्टाचार का विश्लेषण

शुभम अग्रवाल[1], डॉ. राहुल शर्मा[2]

[1]एल.एल.एम., माधव विधि महाविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)
[2]असि. प्रोफेसर, माधव विधि महाविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

शोध पत्र

सारांशः

इस शोध पत्र का उद्देश्य एक सामाजिक अपराध के रूप में भ्रष्टाचार का व्यापक विश्लेषण प्रदान करना, समाज पर इसके हानिकारक प्रभावों की खोज करना और इस व्यापक मुद्दे को समझने और इससे निपटने के लिए एक रूपरेखा का प्रस्ताव करना है। भ्रष्टाचार को लंबे समय से सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए एक गंभीर खतरा माना गया है, जो संस्थानों में विश्वास को कम करता है, प्रगति में बाधा डालता है और असमानता को कायम रखता है। भ्रष्टाचार के कारणों, परिणामों और गतिशीलता की जांच करके, यह पेपर इसकी बहुमुखी प्रकृति के बारे में हमारी समझ को गहरा करने और मजबूत भ्रष्टाचार विरोधी उपायों के महत्व पर प्रकाश डालने का प्रयास करता है। प्रस्तावित ढांचे में निवारक और दंडात्मक दोनों रणनीतियों को शामिल किया गया है, जिसमें सरकारी संस्थानों, नागरिक समाज और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को शामिल करते हुए एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता पर जोर दिया गया है।[1]

भ्रष्टाचार एक व्यापक और हानिकारक मुद्दा है जो दुनिया भर के समाजों को प्रभावित करता है। यह संस्थानों में विश्वास को कम करता है, आर्थिक विकास को बाधित करता है, सामाजिक असमानता को कायम रखता है और शासन में जनता के विश्वास को कम करता है। भ्रष्टाचार से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए एक व्यापक ढांचे की आवश्यकता है। इस ढांचे में निवारक रणनीतियाँ शामिल हैं, जैसे पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ाना, कानूनी और नियामक ढांचे को मजबूत करना और नैतिकता और अखंडता को बढ़ावा देना। विभिन्न देशों की सफल भ्रष्टाचार विरोधी पहल मूल्यवान सबक प्रदान करती हैं, जिसमें प्रासंगिक समझ, हितधारक जुड़ाव, निगरानी और मूल्यांकन, अनुकूली शिक्षा और निरंतर राजनीतिक इच्छाशक्ति का महत्व शामिल है। जबकि रणनीतियों को विशिष्ट संदर्भों के अनुरूप बनाया जाना चाहिए, ये पाठ भ्रष्टाचार को संबोधित करने और अधिक पारदर्शी, जवाबदेह और नैतिक समाज को बढ़ावा देने के प्रयासों का मार्गदर्शन कर सकते हैं।

प्रस्तावना :

भ्रष्टाचार एक व्यापक सामाजिक अपराध है जो दुनिया भर के समाजों के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियाँ पैदा करता है। यह संस्थानों में विश्वास को कमजोर करता है, आर्थिक विकास को विकृत करता है, सामाजिक असमानता को कायम रखता है और समाज के ताने–बाने को नष्ट करता है। भ्रष्टाचार को एक सामाजिक अपराध के रूप में मान्यता देने के लिए इसके कारणों, परिणामों और गतिशीलता की गहरी समझ के साथ–साथ इससे निपटने के लिए प्रभावी रणनीतियों के विकास की आवश्यकता है। इस शोध पत्र का उद्देश्य ऐसी समझ प्रदान करना है और भ्रष्टाचार को एक सामाजिक अपराध के रूप में संबोधित करने के लिए एक व्यापक रूपरेखा का प्रस्ताव करना है।[2]

भ्रष्टाचार एक वैश्विक घटना है जो समाज की अखंडता, स्थिरता और विकास के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियाँ पैदा करती है। इसमें कई प्रकार की अवैध गतिविधियाँ शामिल हैं, जैसे रिश्वतखोरी, गबन और सत्ता का दुरुपयोग, और सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों में पनपती है। भ्रष्टाचार के परिणाम दूरगामी हैं, आर्थिक विकास को प्रभावित कर रहे हैं, सामाजिक असमानताओं को बढ़ा रहे हैं और संस्थानों में जनता का विश्वास कम कर रहे हैं। इस व्यापक मुद्दे से निपटने के लिए, प्रभावी भ्रष्टाचार विरोधी पहल महत्वपूर्ण हैं। उनमें एक व्यापक दृष्टिकोण शामिल है जिसमें निवारक रणनीतियाँ, कानूनी और नियामक सुधार, पारदर्शिता और जवाबदेही तंत्र और अखंडता की संस्कृति को

1 jkst+&,djeSu] ,l- ¼1999½] Hkz"Vkpkj vkSj ljdkj: dkj.k] ifj.kke vkSj lqèkkj] dSfEczt ;wfuoflZVh çsl

2 tkWulu] ,e- ¼2005½] Hkz"Vkpkj ds y{k.k % èku] 'kfä vkSj yksdra=] dSfEczt ;wfuoflZVh çsl

बढ़ावा देना शामिल है। भ्रष्टाचार की गतिशीलता को समझकर और विभिन्न देशों में सफल पहलों से सीखकर, समाज ऐसे भविष्य की दिशा में काम कर सकता है जहां भ्रष्टाचार कम से कम हो और नैतिक शासन कायम हो।
भ्रष्टाचार पूरे मानव इतिहास में एक सतत मुद्दा रहा है, जो भौगोलिक सीमाओं को पार कर दुनिया भर के समाजों को प्रभावित कर रहा है। यह एक बहुआयामी घटना है जो लोकतंत्र की नींव को कमजोर करती है, आर्थिक विकास को बाधित करती है और सामाजिक असमानताओं को कायम रखती है। व्यक्तियों, समुदायों और राष्ट्रों पर इसके व्यापक प्रभाव को समझने के लिए भ्रष्टाचार को एक सामाजिक अपराध के रूप में समझना महत्वपूर्ण है।[3]

अनुसंधान के उद्देश्य और दायरा :

- एक सामाजिक अपराध के रूप में भ्रष्टाचार की अवधारणा का विश्लेषण करना।
- सामाजिक अपराध के रूप में भ्रष्टाचार के कारणों की पहचान करना।
- समाज पर भ्रष्टाचार के परिणामों का पता लगाना।
- एक सामाजिक अपराध के रूप में भ्रष्टाचार की गतिशीलता की जांच करना।
- सामाजिक अपराध के रूप में भ्रष्टाचार से निपटने के लिए एक रूपरेखा का प्रस्ताव करना।

शोध पत्र का दायरा वैश्विक स्तर पर भ्रष्टाचार को एक सामाजिक अपराध के रूप में शामिल करता है। यह विकसित और विकासशील दोनों देशों में भ्रष्टाचार पर विचार करता है, यह पहचानते हुए कि यह विभिन्न संदर्भों में विभिन्न रूपों और डिग्री में प्रकट होता है। पेपर विभिन्न क्षेत्रों में भ्रष्टाचार का विश्लेषण करता है और शासन, अर्थव्यवस्था, सामाजिक समानता और सार्वजनिक विश्वास सहित समाज के विभिन्न आयामों पर इसके प्रभाव का पता लगाता है। यह एक सामाजिक अपराध के रूप में भ्रष्टाचार की व्यापक समझ प्रदान करने के लिए विविध केस अध्ययनों और सर्वोत्तम प्रथाओं से लिया गया है और एक रूपरेखा का प्रस्ताव करता है जिसे विभिन्न संदर्भों में लागू किया जा सकता है। भ्रष्टाचार को एक सामाजिक अपराध के रूप में परिभाषित करना भ्रष्टाचार एक जटिल और बहुआयामी घटना है जो समाज के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियाँ पैदा करती है। जबकि भ्रष्टाचार पर अक्सर कानूनी और नैतिक संदर्भ में चर्चा की जाती है, इसे एक सामाजिक अपराध के रूप में परिभाषित करना एक व्यापक परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है जो समग्र रूप से समाज के ताने–बाने पर इसके प्रभाव को पहचानता है। भ्रष्टाचार को सामाजिक अपराध के चश्मे से देखने में इसकी प्रणालीगत प्रकृति, सामाजिक व्यवस्था पर इसके प्रभाव और इससे व्यक्तियों और समुदायों को होने वाले नुकसान को समझना शामिल है।
भ्रष्टाचार एक जटिल और व्यापक घटना है जिसे विभिन्न तरीकों से समझा जा सकता है। इसके मूल में, भ्रष्टाचार में व्यक्तिगत या सामूहिक लाभ के लिए सौंपी गई शक्ति का दुरुपयोग शामिल है, जिसमें आमतौर पर बेईमानी, शोषण या अनैतिक व्यवहार शामिल होते हैं। यह सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों में निष्पक्षता, अखंडता और जवाबदेही के सिद्धांतों को कमजोर करता है।
भ्रष्टाचार सार्वजनिक संस्थानों में विश्वास को खत्म करता है, कानून के शासन को कमजोर करता है और सामाजिक एकता को कमजोर करता है। जब भ्रष्टाचार प्रचलित होता है, तो यह दंडमुक्ति की संस्कृति में योगदान कर सकता है, जहां व्यक्ति अवैध गतिविधियों में शामिल होने को उचित मानते हैं। इससे धोखाधड़ी, मनी लॉन्ड्रिंग, संगठित अपराध और अवैध तस्करी जैसे विभिन्न प्रकार के सामाजिक अपराध में वृद्धि हो सकती है।
संपूर्ण समाज पर इसके हानिकारक प्रभाव के कारण भ्रष्टाचार को एक सामाजिक अपराध के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। इसमें सौंपी गई शक्ति का दुरुपयोग और व्यक्तिगत या सामूहिक लाभ के लिए सार्वजनिक या निजी संसाधनों का दुरुपयोग शामिल है। भ्रष्टाचार निष्पक्षता, पारदर्शिता और जवाबदेही के सिद्धांतों को कमजोर करता है, जो एक न्यायपूर्ण और कार्यशील समाज के लिए आवश्यक हैं। एक सामाजिक अपराध के रूप में, भ्रष्टाचार संस्थानों में जनता के विश्वास को खत्म कर देता है, सामाजिक असमानताओं को कायम रखता है, आर्थिक विकास में बाधा डालता है और संसाधनों के आवंटन को विकृत करता है। यह न केवल भ्रष्ट आचरण के तत्काल पीड़ितों को नुकसान पहुंचाता है बल्कि समुदायों और राष्ट्रों की समग्र भलाई और प्रगति को भी प्रभावित करता है। इस प्रकार, भ्रष्टाचार को एक सामाजिक अपराध के रूप में देखना इसके व्यापक सामाजिक निहितार्थों को उजागर करता है

[3] fDyVxkMZ] vkj- ¼1988½] Hkz"Vkpkj ij fu;a=.k] dSfyQksfuZ;k foÜofo|ky; çsl

और भ्रष्ट व्यवहार को रोकने, पता लगाने और दंडित करने के लिए ठोस प्रयासों की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

भ्रष्टाचार के कारण : भ्रष्टाचार विभिन्न कारकों से प्रभावित एक जटिल घटना है। भ्रष्टाचार के कारणों को समझने से इसे अधिक प्रभावी ढंग से संबोधित करने और रोकने में मदद मिल सकती है।

किसी देश के भीतर प्रचलित राजनीतिक संस्कृति भ्रष्टाचार के स्तर को प्रभावित कर सकती है। यदि राजनीतिक हलकों में भ्रष्टाचार के प्रति सहिष्णुता या स्वीकार्यता है, तो इसे प्रभावी ढंग से संबोधित करना और मुकाबला करना अधिक चुनौतीपूर्ण हो जाता है। दण्ड से मुक्ति की संस्कृति, जहाँ भ्रष्ट व्यक्तियों को न्यूनतम परिणाम भुगतने पड़ते हैं, समस्या को और बढ़ा सकती है।[4]

आर्थिक कारक, जैसे उच्च स्तर की गरीबी और आय असमानता, भ्रष्टाचार में योगदान कर सकते हैं। जब व्यक्ति अपनी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए संघर्ष करते हैं, तो वे जीवित रहने के साधन के रूप में या अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार करने के लिए भ्रष्ट आचरण का सहारा ले सकते हैं। इसी तरह, धन और अवसरों का असमान वितरण नाराजगी और अन्याय की भावना पैदा कर सकता है, जिससे कुछ व्यक्ति खेल के मैदान को बराबर करने या व्यक्तिगत लाभ के लिए अपने पदों का फायदा उठाने के लिए भ्रष्ट गतिविधियों में शामिल हो सकते हैं।

सामाजिक–सांस्कृतिक कारक किसी समाज में भ्रष्टाचार की व्यापकता और स्वीकार्यता को प्रभावित करते हैं। कुछ संस्कृतियों में, उपहार देना या भाई–भतीजावाद जैसी प्रथाएं गहराई तक व्याप्त हो सकती हैं और उन्हें सामान्य माना जा सकता है, भले ही उनमें भ्रष्ट कार्य शामिल हों। ये सांस्कृतिक मानदंड और मूल्य भ्रष्टाचार के प्रति लोगों के दृष्टिकोण और व्यवहार को आकार दे सकते हैं, या तो इसे हतोत्साहित कर सकते हैं या इसकी घटना को सुविधाजनक बना सकते हैं।

कमजोर पारदर्शिता और जवाबदेही तंत्र भ्रष्टाचार के लिए अनुकूल वातावरण बनाते हैं। जब संस्थानों में खुलेपन की कमी होती है, तो व्यक्तियों के लिए पकड़े जाने या जवाबदेह ठहराए जाने के डर के बिना भ्रष्ट आचरण में शामिल होना आसान हो जाता है। कानून के कमजोर शासन, अप्रभावी नियामक ढांचे और सीमित संस्थागत क्षमता सहित अपर्याप्त शासन संरचनाएं भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे सकती हैं। जब सरकारें और संस्थाएं कानूनों और विनियमों को प्रभावी ढंग से लागू करने में असमर्थ होती हैं, तो इससे भ्रष्टाचार पनपने के अवसर पैदा होते हैं।

सामाजिक–आर्थिक स्थितियाँ भ्रष्टाचार में योगदान कर सकती हैं। गरीबी, आय असमानता और सीमित आर्थिक अवसर व्यक्तियों को जीवित रहने के साधन के रूप में या अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार करने के लिए भ्रष्ट आचरण में संलग्न होने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। इसी तरह, संसाधनों का असमान वितरण भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे सकता है, क्योंकि व्यक्ति अपने लिए बड़ा हिस्सा सुरक्षित करना चाहते हैं। सांस्कृतिक कारक भ्रष्टाचार की व्यापकता को प्रभावित कर सकते हैं। जो समाज भ्रष्ट व्यवहार को सामाजिक और राजनीतिक संबंधों के सामान्य हिस्से के रूप में सहन करते हैं या स्वीकार करते हैं, वे ऐसा वातावरण बनाते हैं जहां भ्रष्टाचार पनप सकता है। पक्षपात, भाई–भतीजावाद और ग्राहकवाद जैसे सांस्कृतिक मानदंड, भ्रष्ट प्रथाओं को कायम रख सकते हैं।[5]

अपर्याप्त कानूनी ढाँचे और प्रवर्तन तंत्र भ्रष्टाचार में योगदान करते हैं। जब भ्रष्टाचार के खिलाफ कानून कमजोर होते हैं, खामियां मौजूद होती हैं, या प्रवर्तन में कमी होती है, तो व्यक्तियों के लिए सजा के न्यूनतम जोखिम के साथ भ्रष्ट कृत्यों में शामिल होना आसान हो जाता है। भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए राजनीतिक नेताओं की प्रतिबद्धता महत्वपूर्ण है। जब नेता विरोध को प्राथमिकता देते हैं

भ्रष्टाचार के प्रयास, मजबूत कानून बनाएं और लागू करें, और स्वतंत्र निरीक्षण संस्थानों की स्थापना करें, यह स्पष्ट संदेश देता है कि भ्रष्टाचार बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। हालाँकि, भ्रष्टाचार से निपटने के लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी इससे प्रभावी ढंग से निपटने में प्रगति में बाधा बन सकती है। भ्रष्टाचार के ये कारण आपस में जुड़े हुए हैं और अक्सर एक–दूसरे को मजबूत करते हैं। भ्रष्टाचार को संबोधित करने के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता है जिसमें शासन संरचनाओं को मजबूत करना, पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा देना, सामाजिक आर्थिक असमानताओं को संबोधित करना, अखंडता की संस्कृति को बढ़ावा देना और भ्रष्टाचार विरोधी कानूनों का प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करना शामिल है।

4 mLykusj] bZ-,e- ¼2008½] Hkz"Vkpkj] vlekurk vkSj dkuwu dk 'kklu % mHkjh gqbZ tsc thou dks vklku cukrh gS] dSfEczt ;wfuoflZVh çsl

5 foÜo cSad] ¼1997½] Hkz"Vkpkj ls fuiVus esa ns'kksa dh enn djuk % foÜo cSad dh Hkwfedk] foÜo cSad çdk'ku

समाज पर भ्रष्टाचार के परिणाम

भ्रष्टाचार सार्वजनिक संस्थानों, सरकारों और कानून के शासन में विश्वास और भरोसे को खत्म कर देता है। जब नागरिकों को यह एहसास होता है कि भ्रष्टाचार व्याप्त है और उन्हें दंडित नहीं किया जा रहा है, तो यह एक की ओर ले जाता है

व्यवस्था की निष्पक्षता और अखंडता में विश्वास की हानि। इसके परिणामस्वरूप नागरिक सहभागिता में गिरावट, करों का भुगतान करने में अनिच्छा और अधिकारियों के प्रति सामान्य मोहभंग हो सकता है। भ्रष्टाचार उस भरोसे को ख़त्म कर देता है जो नागरिकों का अपने संस्थानों और सार्वजनिक अधिकारियों पर होता है। जब भ्रष्टाचार व्याप्त होता है, तो लोग यह अनुभव कर सकते हैं कि सार्वजनिक संसाधनों और सेवाओं का दुरुपयोग किया जा रहा है या व्यक्तिगत लाभ के लिए उनका उपयोग किया जा रहा है। इससे संस्थानों की अपने अधिदेशों को प्रभावी ढंग से और न्यायसंगत ढंग से पूरा करने की क्षमता में विश्वास की हानि होती है।

भ्रष्टाचार संसाधनों को उत्पादक क्षेत्रों और निवेशों से दूर करके आर्थिक विकास में बाधा डालता है। जब बुनियादी ढांचे, स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा और अन्य आवश्यक सेवाओं के लिए सार्वजनिक धन को भ्रष्ट आचरण के माध्यम से निकाल लिया जाता है, तो यह आर्थिक विकास को बाधित करता है और प्रमुख क्षेत्रों के विकास में बाधा डालता है। भ्रष्टाचार बाजार की प्रतिस्पर्धा को भी विकृत करता है, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को हतोत्साहित करता है और व्यापार करने की लागत को बढ़ाता है, जिससे आर्थिक प्रगति अवरुद्ध हो जाती है।

भ्रष्टाचार संस्थानों, सरकारों और सार्वजनिक अधिकारियों में जनता का विश्वास खत्म कर देता है। जब नागरिक भ्रष्ट आचरण को दण्ड से मुक्त होते देखते हैं या जब सार्वजनिक संसाधनों का व्यक्तिगत लाभ के लिए दुरुपयोग किया जाता है, तो वे सिस्टम की निष्पक्षता और अखंडता में विश्वास खो देते हैं। इससे सरकार में विश्वास में कमी आती है, नागरिक जुड़ाव कम होता है और राजनीतिक प्रक्रिया से अलगाव की भावना पैदा होती है।

भ्रष्टाचार बाज़ारों को विकृत करके, निवेश को बाधित करके और उत्पादक क्षेत्रों से संसाधनों को हटाकर आर्थिक विकास को बाधित करता है। यह निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा को कमजोर करता है, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को हतोत्साहित करता है और व्यापार वृद्धि में बाधाएँ पैदा करता है। भ्रष्टाचार लेन–देन की लागत बढ़ाता है, दक्षता कम करता है और आर्थिक अवसरों को सीमित करता है, अंततः गरीबी कम करने के प्रयासों में बाधा डालता है और सामाजिक आर्थिक असमानताओं को कायम रखता है।[6]

भ्रष्टाचार कानून के शासन को कमजोर करता है और न्याय प्रणाली को कमजोर करता है। यह कानूनी प्रक्रियाओं की निष्पक्षता और निष्पक्षता से समझौता करता है, न्यायपालिका में जनता का विश्वास कम करता है और दण्ड से मुक्ति की संस्कृति को जन्म देता है। जब भ्रष्ट व्यक्तियों को सजा नहीं मिलती है, तो यह एक न्यायपूर्ण समाज की नींव को नष्ट कर देता है और कानूनी प्रणाली की विश्वसनीयता को कमजोर कर देता है।

भ्रष्टाचार के परिणामस्वरूप स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा और सामाजिक कल्याण जैसी आवश्यक सार्वजनिक सेवाओं तक असमान पहुंच हो सकती है। जब सभी नागरिकों की भलाई में सुधार लाने के लिए संसाधनों का इस्तेमाल भ्रष्ट आचरण के माध्यम से किया जाता है, तो हाशिए पर रहने वाले और कमजोर समूह अक्सर सबसे अधिक पीड़ित होते हैं। इससे सामाजिक असमानताएँ कायम रहती हैं, क्योंकि जिनके पास धन और संपर्क हैं वे भ्रष्ट प्रणालियों को दरकिनार कर सकते हैं और बेहतर सेवाओं तक पहुँच सकते हैं।

भ्रष्टाचार के परिणाम दूरगामी होते हैं, जो समाज के कई आयामों को प्रभावित करते हैं। भ्रष्टाचार से निपटने के लिए पारदर्शिता को बढ़ावा देने, संस्थानों को मजबूत करने, जवाबदेही बढ़ाने और अखंडता की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए व्यापक उपायों की आवश्यकता है। सतत विकास, समावेशी विकास और समग्र रूप से समाज की भलाई को बढ़ावा देने के लिए भ्रष्टाचार से निपटने के प्रयासों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

भ्रष्टाचार की गतिशीलता : भ्रष्टाचार की गतिशीलता जटिल और बहुआयामी प्रक्रियाओं को संदर्भित करती है जिसके माध्यम से भ्रष्ट आचरण घटित होते हैं, विकसित होते हैं और कायम रहते हैं। भ्रष्टाचार से निपटने के लिए प्रभावी रणनीति विकसित करने के लिए इन गतिशीलता को समझना महत्वपूर्ण है।

6 V³kalisjsalh baVjus'kuy] ¼2021½] Hkz"Vkpkj èkkj.kk lwpdkad 2020] ;gka ls fy;k x;k: https://www.transparency.org/en/cpi/2020

सत्ता की स्थिति में किसी व्यक्ति के कार्यों या निर्णयों को प्रभावित करने के लिए प्रोत्साहन के रूप में धन, उपहार या अन्य मूल्यवान वस्तुओं की पेशकश करना, देना, प्राप्त करना या आग्रह करना। रिश्वतखोरी सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों में हो सकती है। आम तौर पर व्यक्तिगत लाभ के लिए किसी की देखभाल के लिए सौंपे गए धन या संपत्ति का दुरुपयोग या विचलन। भ्रष्टाचार के इस रूप में शामिल है प्राधिकार या उत्तरदायित्व के पदों पर बैठे व्यक्ति सार्वजनिक या संगठनात्मक संसाधनों का दुरुपयोग कर रहे हैं।

भ्रष्टाचार नेटवर्क और संगठित अपराध अक्सर एक–दूसरे को काटते और मजबूत करते हैं, जिससे एक खतरनाक तालमेल बनता है जो कानून के शासन को कमजोर करता है और शासन और सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियां पैदा करता है।[7]

भ्रष्टाचार अक्सर नेटवर्क और रिश्तों के माध्यम से संचालित होता है, जिसमें भ्रष्ट गतिविधियों को सुविधाजनक बनाने के लिए कई कलाकार एक साथ काम करते हैं। इन नेटवर्क में सार्वजनिक अधिकारी, निजी व्यक्ति, व्यवसाय और संगठित अपराध समूह शामिल हो सकते हैं। भ्रष्ट रिश्ते अक्सर व्यक्तिगत संबंधों, वफादारी और एहसान या रिश्वत के आदान–प्रदान पर बनते हैं।

भ्रष्टाचार तब पनपता है जब सत्ता और प्राधिकार के पदों पर बैठे व्यक्ति व्यक्तिगत लाभ के लिए अपने प्रभाव का दुरुपयोग करते हैं। इसमें विवेकाधीन शक्तियों का दुरुपयोग, निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में हेरफेर और प्रणालियों और प्रक्रियाओं में खामियों का फायदा उठाना शामिल हो सकता है। कुछ लोगों के हाथों में सत्ता का संकेंद्रण भ्रष्ट आचरण को बढ़ावा देता है।

भ्रष्टाचार अक्सर समर्थकों और सुविधा देने वालों पर निर्भर करता है जो भ्रष्ट गतिविधियों को सहायता और बढ़ावा देते हैं। इनमें मध्यस्थ, बिचौलिए और द्वारपाल शामिल हो सकते हैं जो रिश्वतखोरी, जबरन वसूली, मनी लॉन्ड्रिंग और अन्य प्रकार के भ्रष्ट लेनदेन की सुविधा प्रदान करते हैं। वे नौकरशाही प्रक्रियाओं के बारे में अपने ज्ञान का फायदा उठा सकते हैं, नियमों को दरकिनार कर सकते हैं, या प्रभावशाली व्यक्तियों तक पहुंच प्रदान कर सकते हैं।

सांस्कृतिक कारक भ्रष्टाचार की गतिशीलता को आकार देने में भूमिका निभाते हैं। जो समाज भ्रष्टाचार को एक आदर्श के रूप में सहन करते हैं या स्वीकार करते हैं, वे ऐसा वातावरण बनाते हैं जहां भ्रष्ट आचरण पनपते हैं। पक्षपात, भाई–भतीजावाद और ग्राहकवाद जैसे सांस्कृतिक कारक भ्रष्ट व्यवहार को कायम रख सकते हैं और इसे चुनौती देना या मिटाना अधिक कठिन बना सकते हैं।

भ्रष्टाचार अक्सर अनुकूल होता है और बदलती परिस्थितियों और भ्रष्टाचार विरोधी उपायों के जवाब में विकसित होता है। भ्रष्ट आचरण अधिक परिष्कृत हो सकते हैं और उनका पता लगाना कठिन हो सकता है क्योंकि व्यक्ति अपनी गतिविधियों को छुपाने के नए तरीके खोज लेते हैं। भ्रष्टाचार भी अंतराल का फायदा उठा सकता है

शासन प्रणालियाँ, उभरती प्रौद्योगिकियाँ और वैश्वीकृत वित्तीय नेटवर्क। सार्वजनिक क्षेत्र में भ्रष्टाचार में सरकारी अधिकारी, सिविल सेवक और राजनेता व्यक्तिगत लाभ के लिए अपने अधिकार का दुरुपयोग करते हैं। यह सार्वजनिक खरीद, लाइसेंसिंग और परमिट, कर प्रशासन, कानून प्रवर्तन और सार्वजनिक सेवा वितरण जैसे क्षेत्रों में हो सकता है। भ्रष्टाचार से निपटने के लिए प्रभावी रणनीति विकसित करने के लिए इसकी गतिशीलता को समझना आवश्यक है। भ्रष्टाचार विरोधी प्रयासों को कानूनी और संस्थागत ढांचे को मजबूत करने, पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा देने, अखंडता की संस्कृति को बढ़ावा देने और रिपोर्टिंग और व्हिसलब्लोइंग के लिए प्रोत्साहन बनाकर इन गतिशीलता को संबोधित करना चाहिए। प्रयासों को भ्रष्ट नेटवर्क को बाधित करने, शासन प्रणालियों में सुधार करने और सार्वजनिक अधिकारियों और निजी व्यक्तियों के बीच नैतिक व्यवहार को बढ़ावा देने पर भी ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

भ्रष्टाचार से निपटने के लिए रूपरेखा

भ्रष्टाचार से निपटने की रूपरेखा में भ्रष्टाचार को प्रभावी ढंग से रोकने, पता लगाने और संबोधित करने के उद्देश्य से उपायों, नीतियों और कार्यों का एक व्यापक सेट शामिल है। हालाँकि विशिष्ट रणनीतियाँ विभिन्न देशों और संदर्भों में भिन्न हो सकती हैं, यहाँ भ्रष्टाचार से निपटने के लिए एक रूपरेखा के कुछ आवश्यक घटक दिए गए हैं।

[7] la;qä jk"Vª fodkl dk;ZØe] ¼2008½] Hkz"Vkpkj ls fuiVuk] thou cnyuk % ,f'k;k vkSj ç'kkar {ks= esa ekuo fodkl esa rsth ykuk

भ्रष्टाचार को रोकने के लिए पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा देना मौलिक है। इसमें खुली खरीद प्रक्रियाओं को लागू करना, सार्वजनिक अधिकारियों की वित्तीय जानकारी का खुलासा करना, निर्णय लेने में पारदर्शिता सुनिश्चित करना और शासन में नागरिक भागीदारी को सुविधाजनक बनाना जैसे उपाय शामिल हैं।

रोकथाम किसी भी भ्रष्टाचार विरोधी ढांचे का एक प्रमुख स्तंभ है। इसमें भ्रष्टाचार के अवसरों को कम करने के उपायों को लागू करना शामिल है। निवारक रणनीतियों में पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा देना, नैतिक मानकों को मजबूत करना, प्रभावी आंतरिक नियंत्रण लागू करना और सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों में अखंडता की संस्कृति को बढ़ावा देना शामिल है।

भ्रष्टाचार से निपटने के लिए एक मजबूत कानूनी और नियामक ढांचा आवश्यक है। इसमें भ्रष्टाचार विरोधी कानून बनाना और लागू करना, स्वतंत्र भ्रष्टाचार विरोधी एजेंसियों की स्थापना करना और यह सुनिश्चित करना शामिल है कि कानूनी ढांचा भ्रष्ट कृत्यों की प्रभावी जांच, अभियोजन और सजा प्रदान करता है।

भ्रष्टाचार से निपटने के लिए संस्थानों को मजबूत करना महत्वपूर्ण है। इसमें कानून प्रवर्तन एजेंसियों, न्यायिक प्रणालियों, लेखापरीक्षा निकायों और अन्य निरीक्षण संस्थानों की क्षमता और स्वतंत्रता का निर्माण शामिल है। इसमें सार्वजनिक अधिकारियों की ईमानदारी और प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए योग्यता–आधारित भर्ती, प्रशिक्षण और पेशेवर विकास को बढ़ावा देना भी शामिल है।[8]

भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिए पारदर्शिता और जवाबदेही तंत्र को बढ़ाना महत्वपूर्ण है। इसमें खुली सरकारी पहल को बढ़ावा देना, पारदर्शी खरीद प्रक्रिया सुनिश्चित करना, सार्वजनिक अधिकारियों के लिए वित्तीय प्रकटीकरण आवश्यकताओं को लागू करना और नागरिक भागीदारी और निरीक्षण के लिए प्रभावी तंत्र स्थापित करना जैसे उपाय शामिल हैं।

व्यापक भ्रष्टाचार विरोधी कानून विकसित करें और अधिनियमित करें जो रिश्वतखोरी, गबन, मनी लॉन्ड्रिंग और सत्ता के दुरुपयोग सहित भ्रष्टाचार के विभिन्न रूपों को अपराध घोषित करे। इन कानूनों को भ्रष्ट कृत्यों की स्पष्ट परिभाषाएँ प्रदान करनी चाहिए, दंड निर्दिष्ट करना चाहिए, और जांच, अभियोजन और संपत्ति वसूली के लिए तंत्र स्थापित करना चाहिए।[9]

ऐसे कानूनों और नीतियों को लागू करें जो सार्वजनिक प्राधिकरणों द्वारा रखी गई जानकारी तक जनता के पहुंच के अधिकार को सुनिश्चित करते हैं। इसमें सरकारी गतिविधियों, बजट, अनुबंध और सार्वजनिक सेवाओं से संबंधित जानकारी का सक्रिय प्रकटीकरण शामिल है। सूचना तक आसान पहुंच को सुविधाजनक बनाने के लिए ऑनलाइन पोर्टल जैसी प्रौद्योगिकी के उपयोग को बढ़ावा देना।

भ्रष्टाचार से निपटने की रूपरेखा के लिए एक समग्र और बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है, मूल कारणों को संबोधित करना, संस्थानों को मजबूत करना, पारदर्शिता को बढ़ावा देना और अखंडता की संस्कृति को बढ़ावा देना। भ्रष्टाचार से प्रभावी ढंग से निपटने और सुशासन को बढ़ावा देने के लिए सरकारों की निरंतर प्रतिबद्धता, नागरिक समाज की सक्रिय भागीदारी और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता है।

केस स्टडीज और सर्वोत्तम प्रथाएँ

सिंगापुर को अक्सर विश्व स्तर पर सबसे कम भ्रष्ट देशों में से एक के रूप में उद्धृत किया जाता है। इसकी सफलता का श्रेय एक व्यापक भ्रष्टाचार–विरोधी रणनीति को दिया जा सकता है, जिसमें भ्रष्टाचार–विरोधी कानूनों का कड़ाई से कार्यान्वयन, प्रभावी जांच एजेंसियां और मजबूत संस्थागत ढांचे शामिल हैं। सिंगापुर निवारक उपायों पर भी ध्यान केंद्रित करता है, जैसे कड़े वित्तीय नियंत्रण, पारदर्शी सार्वजनिक खरीद और सार्वजनिक अधिकारियों के लिए मजबूत नैतिकता प्रशिक्षण।

हांगकांग में आईसीएसी को भ्रष्टाचार से निपटने में अपनी प्रभावशीलता के लिए विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त है। यह सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों से जुड़े भ्रष्टाचार के मामलों की जांच करने की व्यापक शक्तियों के साथ स्वतंत्र रूप से काम करता है। आईसीएसी का सक्रिय दृष्टिकोण, जिसमें निवारक शिक्षा कार्यक्रम और सामुदायिक सहभागिता शामिल है, भ्रष्टाचार के निम्न स्तर के लिए हांगकांग की प्रतिष्ठा को बनाए रखने में सहायक रहा है।

8 ySECIMkWQZ] ts-th- ¼2007½] Hkz"Vkpkj vkSj lqèkkj dk laLFkkxr vFkZ'kkL= % fl)kar] lk{; vkSj uhfr] dSfEczt ;wfuofIZVh çsl

9 tkWulu] ,e- ¼2005½] Hkz"Vkpkj ds y{k.k % èku] 'kfä vkSj yksdra=] dSfEczt ;wfuofIZVh çsl

भ्रष्टाचार विरोधी रणनीतियों को लागू करने से पहले किसी देश के अद्वितीय सामाजिक–राजनीतिक, सांस्कृतिक और संस्थागत संदर्भ को समझना महत्वपूर्ण है। एक संदर्भ में काम करने वाली रणनीतियाँ सीधे दूसरे में स्थानांतरित नहीं की जा सकती हैं, क्योंकि प्रत्येक देश को भ्रष्टाचार की अलग–अलग चुनौतियों और गतिशीलता का सामना करना पड़ता है।[10]

सिंगापुर की सीपीआईबी को व्यापक रूप से एक प्रभावी भ्रष्टाचार विरोधी एजेंसी माना जाता है। यह स्वतंत्र रूप से काम करता है और भ्रष्टाचार के मामलों की जांच और मुकदमा चलाने में इसका मजबूत ट्रैक रिकॉर्ड है। सीपीआईबी की सफलता का श्रेय इसकी मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति, व्यापक कानूनी ढांचे, सख्त प्रवर्तन और सार्वजनिक शिक्षा और अखंडता की संस्कृति को बढ़ावा देने जैसे निवारक उपायों पर जोर दिया जा सकता है।

इंटीग्रिटी पैक्ट इंडोनेशिया में नागरिक समाज संगठनों और सरकारी एजेंसियों के बीच एक सहयोगात्मक पहल है। इसका उद्देश्य सार्वजनिक खरीद में पारदर्शिता और अखंडता को बढ़ावा देना है। समझौते के तहत, खरीद प्रक्रिया में शामिल सभी पक्ष नैतिक प्रथाओं के लिए प्रतिबद्ध हैं, जिसमें रिश्वतखोरी और मिलीभगत से बचना भी शामिल है। इंटीग्रिटी पैक्ट खरीद परियोजनाओं में भ्रष्टाचार के जोखिमों को कम करने और पारदर्शिता बढ़ाने में प्रभावी रहा है।

एस्टोनिया की ई–गवर्नेंस प्रणाली भ्रष्टाचार से निपटने और सार्वजनिक सेवा वितरण में सुधार करने में सहायक रही है। यह प्रणाली नागरिकों और अधिकारियों के बीच सीधे संपर्क को कम करती है, जिससे रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार के अवसर कम हो जाते हैं। यह कुशल ऑनलाइन सेवाओं, सुरक्षित डिजिटल हस्ताक्षर और पारदर्शी प्रक्रियाओं को सक्षम बनाता है, जवाबदेही सुनिश्चित करता है और भ्रष्टाचार के जोखिमों को कम करता है।

हांगकांग के आईसीएसी को उसके सफल भ्रष्टाचार विरोधी प्रयासों के लिए पहचाना जाता है। आईसीएसी स्वतंत्र रूप से काम करती है और भ्रष्टाचार के मामलों की जांच और मुकदमा चलाने में इसका मजबूत ट्रैक रिकॉर्ड है। इसमें व्यापक भ्रष्टाचार निवारण दिशानिर्देश, सार्वजनिक शिक्षा कार्यक्रम और समुदाय के साथ सक्रिय जुड़ाव सहित प्रभावी निवारक उपाय मौजूद हैं।

ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल की राष्ट्रीय अखंडता प्रणाली (एनआईएस) मूल्यांकन एक व्यापक पद्धति है जिसका उपयोग भ्रष्टाचार को रोकने में संस्थानों और तंत्रों की ताकत और प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने के लिए विभिन्न देशों में किया जाता है। एनआईएस आकलन भ्रष्टाचार विरोधी प्रयासों में सुधार के लिए अंतराल और क्षेत्रों की पहचान करने, लक्षित सुधारों और हस्तक्षेपों को सक्षम करने में मदद करता है।

ये केस अध्ययन और सर्वोत्तम प्रथाएं भ्रष्टाचार से निपटने के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण के महत्व को दर्शाती हैं। वे मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति, स्वतंत्र भ्रष्टाचार विरोधी एजेंसियों, प्रभावी निवारक उपायों, पारदर्शिता और जवाबदेही तंत्र और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के महत्व पर जोर देते हैं। इन उदाहरणों से सीखकर, देश भ्रष्टाचार से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए अपने संदर्भों में सफल रणनीतियों को अपना सकते हैं और लागू कर सकते हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः, भ्रष्टाचार एक जटिल और व्यापक समस्या है जो दुनिया भर के समाजों के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियाँ पैदा करती है। हालाँकि, व्यापक और लक्षित प्रयासों के माध्यम से भ्रष्टाचार को प्रभावी ढंग से संबोधित किया जा सकता है। भ्रष्टाचार से निपटने की रूपरेखा में एक बहु–आयामी दृष्टिकोण शामिल है, जिसमें निवारक रणनीतियाँ, कानूनी और नियामक ढांचे को मजबूत करना, पारदर्शिता और जवाबदेही तंत्र को बढ़ाना और अखंडता की संस्कृति को बढ़ावा देना शामिल है।

विभिन्न देशों की सफल भ्रष्टाचार विरोधी पहल मूल्यवान सबक और सर्वोत्तम प्रथाएँ प्रदान करती हैं। इनमें प्रासंगिक कारकों को समझने का महत्व शामिल है,

स्थानीय हितधारकों को शामिल करना, मजबूत निगरानी और मूल्यांकन तंत्र लागू करना, अनुकूली शिक्षा और ज्ञान साझाकरण को बढ़ावा देना और राजनीतिक इच्छाशक्ति और नेतृत्व को बनाए रखना।

अंत में, भ्रष्टाचार से निपटने के लिए एक व्यापक और बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो इसके मूल कारणों को संबोधित करे, संस्थानों को मजबूत करे, पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा दे और अखंडता की संस्कृ ति को बढ़ावा दे। भ्रष्टाचार से निपटने की रूपरेखा में निवारक उपाय, कानूनी और नियामक सुधार, संस्थागत

10 fDyVxkMZ] vkj- ¼1988½] Hkz"Vkpkj ij fu;a=.k] dSfyQksfuZ;k foÜofo|ky; çsl

मजबूती, पारदर्शिता और जवाबदेही तंत्र, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, सार्वजनिक जागरूकता और शिक्षा, और मजबूत निगरानी और मूल्यांकन शामिल हैं।

विभिन्न देशों के सफल केस अध्ययन और सर्वोत्तम प्रथाएं मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति, स्वतंत्र भ्रष्टाचार विरोधी एजेंसियों, प्रभावी निवारक उपायों, पारदर्शिता और सहयोग के महत्व पर प्रकाश डालती हैं। सिंगापुर का सीपीआईबी, इंडोनेशिया का इंटीग्रिटी पैक्ट, एस्टोनिया का ई गवर्नेंस सिस्टम, हांगकांग का आईसीएसी और ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल का एनआईएस असेसमेंट मूल्यवान सबक और अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

सरकारों, नागरिक समाज और अंतर्राष्ट्रीय अभिनेताओं के लिए इन रणनीतियों को लागू करने, उन्हें विशिष्ट संदर्भों में अनुकूलित करने और भ्रष्टाचार विरोधी प्रयासों का लगातार मूल्यांकन और सुधार करने के लिए मिलकर काम करना महत्वपूर्ण है। ऐसा करने से, समाज सुशासन को बढ़ावा दे सकते हैं, सार्वजनिक विश्वास बढ़ा सकते हैं, आर्थिक विकास को बढ़ावा दे सकते हैं, सामाजिक असमानताओं को कम कर सकते हैं और सभी के लिए एक निष्पक्ष और न्यायपूर्ण समाज बना सकते हैं।[11]

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. रोज़–एकरमैन, एस. (1999), भ्रष्टाचार और सरकाररू कारण, परिणाम और सुधार, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस
2. जॉनसन, एम. (2005), भ्रष्टाचार के लक्षण : धन, शक्ति और लोकतंत्र, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस
3. क्लिटगार्ड, आर. (1988), भ्रष्टाचार पर नियंत्रण, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय प्रेस
4. उस्लानेर, ई.एम. (2008), भ्रष्टाचार, असमानता और कानून का शासन : उभरी हुई जेब जीवन को आसान बनाती है, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस
5. विश्व बैंक, (1997), भ्रष्टाचार से निपटने में देशों की मदद करना : विश्व बैंक की भूमिका, विश्व बैंक प्रकाशन
6. ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल, (2021), भ्रष्टाचार धारणा सूचकांक 2020, यहां से लिया गयारू ीजजचेरूध्ध्ण्जतंदेचंतमदबलण्वतहध्मदध्बचपध्2020
7. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम, (2008), भ्रष्टाचार से निपटना, जीवन बदलना : एशिया और प्रशांत क्षेत्र में मानव विकास में तेजी लाना
8. लैम्ब्सडॉर्फ, जे.जी. (2007), भ्रष्टाचार और सुधार का संस्थागत अर्थशास्त्र : सिद्धांत, साक्ष्य और नीति, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस
9. रोज़–एकरमैन, एस, भ्रष्टाचार और सरकार कारण, परिणाम और सुधार, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1999
10. जॉनसन, एम., भ्रष्टाचार के लक्षण धन, शक्ति और लोकतंत्र, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 2005
11. क्लिटगार्ड, आर, भ्रष्टाचार पर नियंत्रण. कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय प्रेस, 1988
12. लैम्ब्सडॉर्फ, जे.जी, भ्रष्टाचार और सुधार का संस्थागत अर्थशास्त्र सिद्धांत, साक्ष्य और नीति, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 2007
13. ट्रेइसमैन, डी, भ्रष्टाचार के कारणरू एक क्रॉस–नेशनल अध्ययन, जर्नल ऑफ पब्लिक इकोनॉमिक्स, 2000, 399–457.
14. माउरो, पी., भ्रष्टाचार और विकास. अर्थशास्त्र का त्रैमासिक जर्नल, 1995 681–712.
15. मुंगिउ–पिप्पिडी, ए., सुशासन की खोज समाज भ्रष्टाचार पर नियंत्रण कैसे विकसित करें, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 2015
16. बर्धन, पी, भ्रष्टाचार और विकास मुद्दों की समीक्षा, जर्नल ऑफ इकोनॉमिक लिटरेचर, 1997, 1320–1346.
17. रोथस्टीन, बी, सरकार की गुणवत्ता भ्रष्टाचार, सामाजिक विश्वास और अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में असमानता, शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस, 2011

11 mLykusj] bZ-,e- ¼2008½] Hkz"Vkpkj] vlekurk vkSj dkuwu dk 'kklu % mHkjh gqbZ tsc thou dks vklku cukrh gS] dSfEczt ;wfuoflZVh çsl

18. उस्लानेर, ई.एम, भ्रष्टाचार, असमानता और कानून का शासन उभरी हुई जेब जीवन को आसान बनाती है, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 2008
19. हेडेनहाइमर, ए.जे., जॉनस्टन, एम., और लेविन, वी.टी. (सं.), राजनीतिक भ्रष्टाचार एक पुस्तिका. लेनदेन प्रकाशक, 1989